लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

तुलसीदास कृत विनय पत्रिका

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

8. विनय पत्रिका

'विनय पत्रिका' विनय के पदों का संग्रह है जिसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने, डॉ० श्यामसुन्दर दास के अनुसार वि० सं० 1638 से 1639 के मध्य की है। यह शिल्प एवं प्रौढ़ता की दृष्टि से 'रामचरितमानस' के बाद की रचना मानी जाती है। इसमें अनेक देवी-देवताओं की वन्दना की गई है।

विनय पत्रिका के अंतर्गत प्रारंभ में विघ्ननाशक के रूप में गणपति गजेश की वन्दना करते हुए गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं -

'गाइये गनपति जयवंदन। संकर सुवन भवानी नंदन॥
सिद्धि - सदन, गज - बदन, विनायक। कृपा - सिंधु, सुंदर, सुखदायक॥
मोदक प्रिय, मुद - मंगलदाता। विद्या - वारिधि, बुद्धि - विधाता॥

माँगत तुलसीदास कर जोरे । बसहि रामसिय मानस मोरे ।।"

उपर्युक्त पंक्तियों में गोस्वामी जी श्री गणेश जी से हाथ जोड़कर केवल यही वर माँगते हैं कि मेरे मन - मंदिर में श्री सीतारामजी सदा निवास करें ।

'विनय पत्रिका' में 'गणेश - वंदना के पश्चात सूर्य - स्तुति, शिव - स्तुति, देवी - स्तुति, गंगा - स्तुति, काशी - स्तुति, चित्रकूट - स्तुति, हनुमान स्तुति, लक्ष्मण स्तुति, भरत - स्तुति, शत्रुघ्न - स्तुति, श्रीसीता - स्तुति, श्रीराम - स्तुति आदि कितनी ही स्तुतियाँ की गयी हैं।

यह निर्विवाद सत्य है कि विनय पत्रिका में भक्ति - रस का पूर्ण परिपाक हुआ है। इसमें नवधा - भक्ति को विशेष महत्व प्राप्त हुआ है। एक भक्त हृदय के जो उद्‌गार इसमें हैं वैसे अन्यत्र दुर्लभ है। 'विनय पत्रिका' गोस्वामी जी की सर्वश्रेष्ठ कृति है जिसमें गोस्वामी तुलसीदास के प्रौढ़ जीवन की समस्त विनम्रता तथा राम के प्रति आराधना समन्वित रूप में प्रस्तुत हुई है।